असलम जमशेदपुरी के साथ कथा संधि कार्यक्रम

प्रसिद्ध उर्दू कथाकार एवं आलोचक असलम जमशेदपुरी के साथ साहित्य अकादमी का कथासंधि कार्यक्रम का आयोजन 21 अक्तूबर को किया गया। अपनी रचना प्रक्रिया के बारे में बताते हुए उन्होंने कहा कि बचपन से ही उन्हें घर में रखे इब्ने शफी, बुशरा रहमान आदि के उपन्यास पढ़ने का शौक था और उन्हीं को पढ़-पढ़ कर लिखने की कोशिश बचपन में ही शुरू कर दी थी। वे अपनी रचनाओं को लिफाफे में रखकर विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं को भेज देते थे। इसी तरह उनकी पहली कहानी 'निशानी' जब छपी जब वे आठवीं क्लास में पढ़ते थे। उनका पहला कहानी संग्रह 'उफक की मुस्कुराहट' 1997 में आया, साथ ही बच्चों की कहानियों का संग्रह 'ममता की आवाज' भी इसी वर्ष प्रकाशित हुआ। आलोचना की उनकी पहली पुस्तक 2001 में प्रकाशित हुई। उन्होंने अपनी लोकप्रिय पुस्तकों उर्दू फिक्शन के पांच रंग (आलोचना), लेंड्रा (कहानी-संग्रह) आदि के बारे में भी विस्तार से बताया। उन्होंने अपनी कहानी 'गोदान से पहले' का पाठ भी किया, जिसमें एक हिंदू परिवार का गाय प्रेम और बदली हुई परिस्थितियों में उन पर गाय को बेचने के आरोप जैसे असंवेदनशील और मार्मिक पक्ष को प्रस्तुत किया गया था। कार्यक्रम के पश्चात उन्होंने उपस्थित श्रोताओं के प्रश्नों का जवाब दिए। ज्ञात हो कि असलम जमशेदपुरी की 42 पुस्तकें प्रकाशित हैं, जिनमें कहानी-संग्रह, आलोचना पुस्तकें और संपादित पुस्तकें भी शामिल हैं। आप चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय में प्रोफेसर हैं। कार्यक्रम में उर्दू के कई महत्वपूर्ण लेखक, प्राध्यापक फारूख बक्शी, परवेज शहरयार, चंद्रभान खयाल, अब्बू जहीर रब्बानी, ख़्वाजा गुलाम सैय्यदन एवं छात्र-छात्राएँ उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन अकादमी के उपसचिव देवेंद्र कुमार देवेश ने किया।